Live in the Spirit

# सीड़ फॉर लिविंग

ब्रदर मैन्युएल मिनिस्ट्रिज मासिक प्रकाशन दिसंबर २०१३

## अगर आपका अनुग्रह न होता...

## मैं यह दौड़ हार जाता

परमेश्वर प्यार है। जो भी वो करते हैं, उनके इसी महान प्यार से उमडता है। जब कभी वे अपनी दया और माफी, कृपादृष्टि और आशिर्वाद, करुणा और सहनशीलता को फैलाते है, यह केवल उनके अनुग्रह द्वारा ही होता है!

**परंतु अनुग्रह क्या है?**

अनुग्रह परमेश्वर की वो कृपा है, जिसे पाने के लायक हम नहीं। यह परमेश्वर की दया है, जिसके योग्य हम नहीं। यह कृपा पाने के लिए ना हमने कुछ किया है, और नाही कुछ कर सकते है। यह परमेश्वर से मिलनेवाला एक वरदान है। अनुग्रह यह परमेश्वर द्वारा मनुष्य को दी गयी वो दैविक सहायता है, जिसके द्वारा वो अपने पुनरुद्धार, या पवित्रता; या पवरमेश्वर से आनेवाले गुण; या फिर शुद्धिकरण की स्थिति का दैविक कृपा द्वारा आनंद लेते है।

**येशू के बलिदान द्वारा प्राप्त अनुग्रह – परमेश्वर का धन।**

मानवजाति की रचना भी अनुग्रह के स्थिति मे ही की गयी थी। परमेश्वरने खास तौर पर सातवा दिन बनाया और उसे निरंतर विश्राम दिन और मेलमिलाप के दिन के रुप में पवित्र किया, ताकि अनुग्रह की इस व्यक्तिगत स्थिति को कायम रखा जाए और यह निश्चित करे, कि उनकी रचना अपने रचैता को जाने और स्वयं प्रभू परमेश्वर से, उनकी महान उपस्थिति में अपना संपर्क जोड़े।

दूसरे शब्दों में कहा जाए तो, आप तब तक अनुग्रह नहीं पा सकते जब तक आप विश्राम नहीं करते। जो लोग विश्राम करते है, वो ही अनुग्रहित लोग है। इसी कारण मै लोगों को सलाह देता हुँ, कि विश्राम करो और आशिर्वादित हो जाओ।

अनुग्रह के बिना, कोई भी मुक्ति नहीं पा सकता; अनुग्रह के बिना, कोई भी उद्धार नहीं पा सकता; अनुग्रह के बिना, कोई भी क्रिस्ति के तौर पर बढ़ नहीं सकता। एक क्रिस्ति को श्वास लेने के लिए जिस प्राणवायु की जरुरत है, वह अनुग्रह है।

आत्मसात और धन्यवाद देने का रवैया भी महत्वपूर्ण है। हमारे मुसीबतों के बिच भी, हमारी प्रार्थना हमेशा स्तुति के रवैये मे होनी चाहिए।

हमारी रोजमर्रा की जिंदगी में, हम में से बहुत से लोग दुश्मनों के झूठ की वजह से दोष और आपत्ति का निशाना बन जाते है। मेरा यकिन करो, ऐसा अच्छे लोगों के साथ होता है। जब उनका सामना तनावपूर्ण परिस्थितियों से होता है, तब उनके विश्वास में दरार पडने लगती है। वो परमेश्वर से सवाल करने लगते है और उनसे गुस्सा भी हो जाते है। गलती परमेश्वर की नहीं, परंतु हमारी है। हम उनकी पूरी विजय अपने जीवन में पाने मे असमर्थ होते है क्योंकि हम शैतान के हमले के लिए परमेश्वर को जिम्मेदार ठहराते है।

एक हसमुख और आनंदमय हृदय न होने से, हम शत्रू को हमारे खिलाफ आने का दरवाजा खोलते हैं। जो हथियार परमेश्वरने हमें शैतान पर विजय पाने के लिए दिया है, उसका इस्तमाल करने के बजाय हम उनसे अपनी दूरदशा की शिकायत करते रहते है। सारे हथियारों में से, स्तुति का औजार एक महान हथियार है!!

जब सबकुछ अच्छे से होता हो केवल तब ही नहीं परंतु हमे हर समय परमेश्वर की स्तुति करते रहना है। बल्कि हमे बुरे समय में भी परमेश्वर की स्तुति करनी है। जब सबकुछ निराशाजनक लगे उस समय भी तुम्हें परमेश्वर में बड़ाई करनी है।

तो आओ हम सब परमेश्वर को आशिर्वादित करें और उनकी स्तुति करे और शैतान को हमारे जीवन के हर एक पहलू में पराजित करे। आओ हम सब स्तुति के लोग बन जाए।

–ब्रदर मैन्युएल मेरगुल्याओं

**आनंदमय और खुशीयों से भरा नाताल और**

**समृद्धी से परिपूर्ण नये साल २०१४ की शुभकामनाए**

# शांति और उन्नति

दो प्रकार के लोग होते है: एक जो येशू के व्यक्ति का पिछा करते है, और एक जो येशू के उसूलों का पालन करते हैं।

जो येशू के व्यक्ति का पिछा करते है, वे येशू को अपना प्रभू और उद्धारकरता के रुप में स्वीकारते है, और ज्यादातर, हमेशा शांति पाते है। लेकिन खुद की मदत करने के लिए एक उँगली तक नहीं उठाते, क्योंकि वे प्रतिक्षा करते है, कि परमेश्वर उनके लिए सबकुछ करेंगे, इसलिए वे येशू की उन्नति का आनंद नहीं ले पाते।

फिर ऐसे भी लोग है, जो येशू के उसूलों का पूरी निष्ठी से पालन करते है, परंतु येशू के व्यक्ति को ठुकाराते है। ये लोग उन्नति तो पाते है, परंतु उनके पास शांति नहीं होती। वो कभी भी उनके आशिर्वादों में विश्राम नहीं कर पाते।

इसलिए, शांति और उन्नति पाने के लिए, हमे दोनो का पिछा करना है, येशू के व्यक्ति का भी और उनके उसूलों का।

परमेश्वर आपको आशिर्वादित करें।

# Morning Star

(Rev. 2:28, 22:16, Job 38:6&7, Phil. 2:15)

Visible and invisible little stars
People wonder what you are.
Focusing on the Lord in meditation
We know it is a part of God's Creation.
Including its direction and location.
Pointing to the "Son of Man" with relation.
(Gen. 1: 14-19, Ps. 2:7, Ps. 8:3, John 1:3)

Three wise men from the East,
Were guided by a bright star.
On reaching Bethlehem, they were distracted
By worldly glamour and the people's power.
This made them lose sight of the guiding star.
Yet, they found it and the "Son of Man" not very far. (Matt. 2:1-11)
With Christ in us, "the hope of glory". (Col. 1–27)
There is no size, shape or colour bar.

The Word was made flesh
And we saw His glory, as that of the Father (John 1:14)
Yet, in our religion
We make Him a helpless child rather. (2 Tim. 3:5 & 7)
He who has no favourites (Acts 10:34)
Can supply all our needs. (Phil. 4:19)
Still we prefer to be religious (2 Tim. 3:5)
Spending time in useless deeds (Isaiah 64-6)
And collecting weeds. (Matt. 6:19 to 21)

**Benedict Vivian Fernandez**

# स्वर्ग के नागरिक !

मत्ती ५:४ – धन्य हैं वे, जो शोक करते हैं, क्योंकि वे शांति पाएँगे।

शोक की स्थिति? और धन्य?

इस बात को अच्छी तरह समझने के लिए, हम सृष्टि की रचना के प्रारंभ में जाएंगे।

परमेश्वर पृथ्वी के मिट्टी से सिद्ध घर बनाते है और अपना श्वास उनपर उंडेलते है! और तब ये मिट्टे के घर जीवित प्राण बन जाते है, और परमेश्वर के सिद्ध स्वरुप को दर्शाते है! परंतु इस में, विरोधी दखल देता है। यह दखलअंदाजी उन जीवित प्राणों को गुमराह और उलझाती है और वे परमेश्वर से ज्यादा विरोधी को दर्शाने लगते है!

उचित समय में, परमेश्वरने एक कुँवारी स्त्री पर अपने सामर्थ्य की छाया की और अपने खूद के बटे को उसके गर्भ में बोया। और वह पुराने प्राण को सिद्ध नयी रचना में परिवर्तित करनेवाला एक सिद्ध रुपरेखा बन जाता है। अब यह नयी रचना पुरानी रचना में घुलमिल जाता है और पृथ्वी वासीयों को पूर्णतः मुक्त करने की प्रतिक्षा करता है। वो शोक करता है, वह नम्र, भूखा और प्यासा है और येशू कहते है, ये कोई और नहीं परंतु मै हूँ, जो तुम्हारे अंदर जीता है, मैं रुका हूँ, ताकि तुम्हें संपूर्ण मुक्ति दे सकू और तुम उस मकसद की पूर्णता में आ सको जिसके लिए तुम्हें रचा गया है! ताकि तुम स्वर्गीय जीव बनो, परमेश्वर की संतान बनो! "

**शोक मनाओ**

जैसे आत्मा में दीन लोगों के लिए था, वैसे ही शोक मनानेवालों के लिए यह है:

- कमी और आकांशा यह सभी के जीवन में होते है
- जब हम शोक करते है, तब हमे खालीपन, जरुरतमंद, और शांति के लिए तडप महसूस होती है।
- जीवन बिल्कुल भी सही नहीं हैं
- इस जीवन में एक छेद है, जिसे हम स्वयं भर नहीं सकते
- जो कुछ हमने खोया है, उसे हम खूद पुनःप्राप्त नहीं कर सकते
- जब मै शोक करता हूँ, तो ऐसा लगता है, जैसे मै प्रतिक्षा के स्थिति में हूँ, प्रतिक्षा कर रही हूँ कि कैसे ना कैसे मेरा जीवन फिर से सवर जाए
- शोक के स्थिति में, हम हमारी गरीबी और कमी के बारे में ज्यादा जागृक होते है
- शोक यह कोई आनंद मनाने की जगह नहीं। यह दर्दनीय और दिल के लिए अत्यंत कष्ठदायी होता है। शोक मनाना मतलब जो आपने खोया है उसपर दूख मनाना होता है
- हम अपने खोए हुए रिश्तों और मौकों पर शोक मनाते है
- हम अपने पाप पर शोक नहीं मना सकते और नाही उसके परिणामों पर
- पाप और पीड़ाओं से भरी इस दुनिया से जब कोई गुजरता है, तो हम इस कारण भी दुख से भर जाते है
- जी हाँ, इस दुनिया में सबकुछ खो जाता है, यहाँ सबकुछ सही नहीं, और हम ऐसे जगत में जी रहें है, जो हमारा सच्चा और अंतिम घर नहीं
- शोक मनाना मतलब इस गिरी हुयी दुनिया के उन सारे चीजों को पहचानना हैं, जो परमेश्वर के इच्छा के अनुसार नहीं है।

इस पापी दुनिया में होनेवाले सारे नुक्सान पर दुख व्यक्त करना यह चिन्ह है, कि परमेश्वर हमारे जीवन में कार्य कर रहे है और उनकी महरबानी हम पर है।

येशू स्वयं, परमेश्वर के दिल के शोक को व्यक्त करते है, जो अपनी ही रचना के पाप, विनाश और मौत पर शोक मनाते है।

इस गिरी हुयी दुनिया में जीने की वजह से, जो नुकसान का शोक हम करते है, उस से अधिक परमेश्वर शोक करते हैं!

परमेश्वर इस दुख, दर्द और विनाश को हमसे भी गहरे रुप से जानते है, जो हम एक दूसरे और खूद को देते है।

परमेश्वर पाप से नफरत करते है, क्योंकि वे देखते हैं, कि पापने उनकी रचना की क्या दूरदशा की है।

जो नुकसान का शोक हम अब कर रहे है, ये कहानी का अंत नहीं हैं। ये शब्द भविष्य के लिए कहा गया है। परमेश्वर का राज्या यह वर्तमान और भविष्य दोनों की सच्चाई है। हम उसे अभी ग्रहण करते है और फिर भी जो परमेश्वर के पास हमारे लिए रखा है, उसे संपूर्ण रुप से पाने की हम प्रतिक्षा करते है। और यह बात सचमुच चकित करनेवाली है।

हम जरुर "शांति पाएंगे"! हमारे दुखोंका सच में अंत होगा, थोड़ा नहीं लेकिन पूरी तरह और संपूर्ण तौर पर।

परमेश्वरने अपनी रचना की परिस्थिति पर ऐसे ही शोक व्यक्त नहीं किया है, वे उन्हें मुक्त कर रहे है। संत पौलुस कुलुस्सियों १:२० में हम से कहते है, कि परमेश्वरने, येशू के द्वारा, सारी चीजे खुद से जोडी है। येशूने खुद को इस घायल और पापी मानवजाति से जोडा ताकि वे हमे क्षमा करे और अंदर–बाहर से चंगाई दे। वे जरुर हमे समस्त, उचित और संपूर्ण शांति देंगे। यही परमेश्वर की सर्वोत्तम खुसी है।

सही शोक मनाना यह इस बात का सबूत हैं, कि परमेश्वर हमारे जीवन में कार्य कर रहे है और हम उनकी आत्मा को उत्तर दे रहे है।

परमेश्वर हमे उन सारे दुखों से दूर कर रहे है जो बुराई और उनके परिणामों से उत्पन्न होते है।

येशूने पाप और मृत्यु पर विजय पायी है, यही सबसे बडी शांति है, जो हमारे पास है और वे फिर एक बार इस पाप और मृत्यु को हमसे हमेशा हमेशा के लिए दूर करेंगे, पहले हमसे फिर बाकी सब जगह से।

हमारे लिए एक बडी शांति रुकि हैं, कि हम परमेश्वर की मुक्ति को पूरी तरह से देखे, जाने और उसमे जीये!

तो आज, हम अपनी ही गरीबी, प्रतिक्षा और शोक में जीने के लिए आजाद है। परमेश्वर हमे ज्यादा से ज्यादा अपनी तरह बना रहे है। और आज हम अपनी प्रतिक्षा में शांत रह सकते हैं, क्योंकि हमे पूरा भरोसा और आशा है, कि किसी दिन हम परमेश्वर के राज्य में संपूर्ण शांति पाएंगे, वो राज्य जो आज भी, येशू मसीह के द्वारा हमारा है। हालेलुया!

**– बहन लिनेट मेरगुल्याओं**

# क्या पैसे नहीं हैं ? अच्छा है ?

आपके जीवन मे दुनिया के सारे पैसे होने से अच्छा है, कि कोई मकसद हो और पैसे नही।

पवित्र शास्त्र कहता है, कि कैसे परमेश्वरने इस्त्राएलियों को गुलामी के जुए से मुक्त किया, और साथ ही उन्होंने मिस्त्रियों के दिलों को भी तैयार किया ताकि वे उन्हें वस्त्र और सोने, चाँदी के वस्तुए दे।

इससे कुछ समय बाद ही, जब मूसा परमेश्वर से मिलने सीनै पर्वत पर गया था तब ये "नये धनी" इस्त्राएलियोंने अपनी छावनी (तंबू) सीनै पर्वत के आगे डाली।

इन इस्त्राएलियों के पास मूसा का इंतजार करने के अलावा और कोई दूसरा दिलचस्प काम नहीं था। और जब मूसा के लौटने का कोई संकेत स्पष्ट रुप से नहीं नजर आया, तब वे बेचैन हो गए। उनके पास तो बहुत सा सोना और चाँदी यूँही पडा था। तो जैसे बहुत से धनवान और बिना मकसद वाले लोग करते है, उन्होंने भी वैसा ही किया। उन्होंने अपने ही मनोरंजन के लिए इसका इस्तेमाल किया। पहले, तो उन्होंने सारा सोना पिघलाया और बछडें के आकर में एक मुर्ती बनायी। और क्योंकि जिसकी पूजा हम करते है, हम भी वैसे ही बन जाते है, तो तुरंत ही उसके बाद, सारे इस्त्राएली, जानवरों की तरह बरताव करने लगे।

आज के दौर में भी ऐसा ही होता है।

बहुत से अमीर बच्चों को देखो। माता पिता दोनो इतने व्यस्थ होते है, कि उनके पास अपने बच्चों के साथ बिताने के लिए समय ही नहीं होता। और इस कमी को पूरा करने के लिए वो अपने बच्चों को पैसे देकर प्यार जताने की कोशिश करते है। एक पिता अपने बच्चे को पैसे देते हुए कहता है, "बेटा, ये लो, क्यों न तुम इन्हें अच्छे काम में इस्तमाल करो? जाओ और अपने लिए कुछ खरीदों जो तुम्हें पसंद हो.. .कुछ भी। लेकिन याद रखना कि तुम कभी न भूलो...तुम्हारे पिता तुमसे बहुत प्यार करते है। और पैसों की ये बडी गद्दी तुम्हें दिखाएगी कि मै तुमसे कितना प्यार करता हूँ।"

जब ये बच्चे छोटे होते है, तब वे अपने लिए कुछ तोफियाँ, खिलौने, इत्यादी चीजें खरीदकर मन बहलाते है। और धीरे धीरे बडे हो जाने पर ये चीजें संतुष्ट नहीं करती। इसलिए वे विडीओ गेम्स, शराब, गर्द, तेज गाड़ीयाँ जैसे बड़ी चीजों से मन बहलाते है। और जब यह भी संतुष्ट नही करती तब और ज्यादा शराब, और ज्यादा गर्द इत्यादी...।

आज बहुत से अमीर बच्चे उन पैसों की फिजूल खर्ची करते हैं, जो उन्होंने कभी कमाए ही नहीं और उन चीजों पर जो उनकी जरुरत नहीं। और आखिर में, ये बच्चे या तो नाली में गिरे होते है, या पुनर्वास, बंदीगृह या फिर कब्र में।

परमेश्वर यह बिल्कुल भी पसंद नहीं करते।

परमेश्वर लोगों की अमीर बनने की प्रार्थना को ज्यादा अनसुनी करते है, इसका मतलब यह नहीं कि वे देना नहीं चाहते लेकिन वे जानते है, कि लोग इन पैसों को जिम्मेदारी से खर्च नहीं करेंगे।

परमेश्वर चाहते हैं, कि हम जीवन में सारी अच्छी चीजों का आनंद उठाए –पैसों का भी। लेकिन कभी कभी वो अपने आपको रोकते हैं, क्योंकि वे जानते है, कि जो हम माँग रहे हैं, वह हमारे लिए हितकारी होने के बजाय, हानिकारक ज्यादा होगा।

तो अगर आप परमेश्वर के लिए कठीन बना रहे है, कि वे आपके लिए कुछ करे, तो इससे पिछे हटो। परमेश्वर अच्छे और न्यायी है। कुछ अच्छा और सही करने के लिए हमे उन्हें मनाना नहीं पड़ता। जब भोजन का समय होता हैं, तब बच्चा अपने माता पिता को उसे कुछ खाने के लिए देने को नहीं मनाना। माता पिता खुद प्यार से उसके लिए थाली में कुछ अच्छी चीजें परोस कर लाते है... और कुछ ज्यादा ही।

जो श्रेय हम परमेश्वर को उनके कामों के लिए दे रहें है, उससे भी ज्यादा श्रेय हमे उन्हें देना है।

क्या पैसे नहीं है? अच्छा है! वो तो वैसे भी आपको मिले ही जाऐंगे...लेकिन अगर आप उसके लायक हो तो। जीवन में एक मकसद रखो...एक बहतर और भला मकसद।

# Christmas CrossWord

JOY
LORD
MARY
JESUS
KINGS
GLORY
PEACE
JOSEPH
ANGELS
CHRIST
MANGER
SAVIOUR
SHEPHERDS
BETHLEHEM

# गवाहियाँ

ग वा हि याँ

मै फिल्म इंडस्ट्री में काम करता हूँ और हाल ही में मैने भाडे पर केमरा देना का अपना खूद का व्यवसाय शुरु किया है। मैने विदेश से ४० लाख का कैमरा मंगवाया क्योंकि वह भारत में उपलब्द नहीं था। जिस व्यक्ति से मैने कैमरा खरीदा था उसने मुझे आश्वासन दिया कि १५ दिनों में वह मुझ तक कैमरा पहुँचाएगा। तीन महिने बीत गये फिर भी मुझे कैमरा नहीं मिला। इसी दौरान, मेरे घर में भी बहुत तनाव था। मैने ब्रदर मैन्युएल से बात की, उन्होंने मुझे लगातार प्रार्थना करते रहने की सलाह दी। निरंतर लिखित याचना और प्रार्थनाओं द्वारा आखिर मुझे चौथे महीने में कैमरा मिल गया। मैने अपना कैमरा भाडें पर देना शुरु किया, और अचानक ही मेरे कैमरा की एल सी डी डीस्प्ले, खराब हो गयी। मुझ से कहा गया कि इस कैमरा की मरंमत भारत में नहीं हो सकता। मैने फिर से ब्रदर मैन्युएल को यह बात बताई। उन्होंने मुझे परिवार के साथ हर रोज प्रार्थना करने की सलाह दी। तुरंत इसके बाद किसीने मुझसे कहा कि वह एल सी डी यही मुंबई में बन सकती है। उस कैमरा की मरंमत हो गयी और एक ही हफ्ते में मैने अपना व्यवसाय फिर से शुरु किया। और जो पैसे नहीं आ रहे थे वो भी आना शुरु हो गये। मै परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ, जिन्होंने मुझे इस मुश्किल दौर से बाहर निकाला और साथ ही ब्रदर मैन्युएल का भी धन्यवाद करता हूँ, जिन्होंने मुझे हर समय सही सलाह दी।

–सुभाष पारेख

सन १९८९ से मुझे दिल की बहुत ही गंभीर समस्या थी। डॉक्टर भी अचंबित हैं, कि मै अभी तक जिंदा हूँ। वो कहते है कि मै भाग्यशाली हूँ, कि दिल की इतनी गंभीर समस्या होने के बावजूद, मै एक सेहतमंद जिंदगी का मजा ले रही हूँ। मै जानती हूँ कि यह केवल परमेश्वर की वजह से ही संभव है। मै जानती हूँ कि येशू मुझ से प्यार करते है और मै उनकी नजरों में बहुत ही अनमोल हूँ। वो मेरा ख्याल रख रहे है। मै ब्रदर मैन्युएल और इस सेवकाई का उनके निरंतर प्रार्थनाओं के लिए धन्यवाद करती हूँ। मै हर एक क्षण का आनंद ले रही हूँ।

–कैरलाइन कुट्टो

Pranab Roy

Marie Fernandes

Anand Mathre

Jagdish Ramani

**हम अपने आपको आशिर्वादित समझते है, कि इस साल परमेश्वरने हमारे खुद के बहुत से करीबी लोगों को अपने सनातन घर में बुलाया है। अब स्वर्ग में बी.एम.एम की एक खास और सामर्थ्यशील मध्यस्थि करनेवाली सेना स्थापित हुई है, और वे ब्रदर मैन्युएल, इस सेवकाई और हम सभी के लिए लगातार मध्यस्थि कर रहे है। तो हम हमारी प्रार्थनाओं को उनकी प्रार्थनाओं के साथ मिलाए। मै प्रार्थना करता हूँ, कि परमेश्वर का निरंतर प्रकाश उन पर और हम पर लगातार और हमेशा चमकता रहे। आमीन**

Benedict Fernandes

Monthi Lobo

Hema Ullal

Freeda D'souza

**युवकों की सभा**
दिसंबर २७, २०१३

**नये साल का उत्सव**
जनवरी १, २०१४

**गोवा शुभसमाचार घोषणा**
जनवरी ४–५, २०१४

**मुंबई ध्यानसभा (रिट्रिट)**
जनवरी ११–१२, २०१४

**मँगलोर शुभसमाचार घोषणा**
जनवरी १८–१९, २०१४

**बुधवार**
आर. डी. नेशनल कॉलेज
लिंकिंग रोड,
बांद्रा (पश्चिम), मुंबई–४०००५०, भारत
समयः शाम ५ बजे

**मुख्यकार्यालय**
एस–४, ब्ल्यु नाइल अर्पाटमेन्टस
सी. एच. एस.लिमीटेड
प्लोट नंबर ३९, वरोडा रोड
बांद्रा (पश्चिम), मुंबई–४०००५०,
भारत

**भारत**
पी.ओ. बोक्स १६६५५
मुबई – ४०००५०, भारत


*Live in the Spirit*
BRO. MANUEL MINISTRIES

Printed at Jyoti Printers